डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
मोबाइल नंबर- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 दिनांक - 11-07-2020

विषय- संस्कृत (कादम्बरी)

कादंबरी कथा

महाकवि बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ गद्यकार हैं। कादंबरी कथामुख के वर्णन में सर्वप्रथम राजा शूद्रक का बर्णन बड़े ही सुंदरतम ढंग से किया गया है । जिसके वर्णन को पढ़कर लगता है कि महाकवि सामने बैठकर कथा कह रहे हैं और हम पाठकगण श्रोता बन कर मुग्ध होकर उनकी कथा का रसास्वादन कर रहे हैं । देखिए कितना मनोमुग्ध एवं आकर्षित करने वाली कथा है ।

शुद्रक नाम का एक राजा था जो दूसरे इंद्र के समान था । जिसके शासन को सभी राजा सिर झुका कर सम्मान के साथ मानते थे। जो करधनी की लड़ियों के समान चारों ओर समुद्र से घिरी हुई वसुंधरा का स्वामी था। जिसके प्रताप और प्रेम से सभी सामन्त विनत थे। जो चक्रवर्ती के लक्षणों से युक्त था। जो शंख चक्र को धारण किए हुए भगवान विष्णु के समान था। जो काम को जीत लेने के कारण शिव के समान, शक्ति में कार्तिकेय के समान, बड़े-बड़े राजाओं का मान-मर्दन करने के कारण ब्रह्मा के समान था। जो गंगा के प्रवाह की तरह अनवरत प्रवाहमान था। प्रत्येक दिन उन्नति की ओर अग्रसर होने के कारण सूर्य के समान था । अपने चरणों की छाया से लोगों एवं देवों को सुखी बनाने वाले सुमेरु पर्वत के समान था। शूद्रक के विविध गुणों का वर्णन महाकवि ने इन शब्दों में किया है-

कर्ता महाश्चर्याणाम्, आहर्ता क्रतूनाम्, आदर्शः सर्वशास्त्राणाम् उत्पत्तिः कलानां, कुलभवनं गुणानाम्, आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमंडलस्य उत्पातकेतुरहितजनस्य, प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्, प्रत्यादेशो धनुष्मताम्, धौरेयः साहसिकानाम्,.....

एवं प्रकार से शुद्रक राजा के विविध गुणों का वर्णन महाकवि ने किया है। ऐसा कोई भी अंश नहीं है जिसका वर्णन कवि ने नहीं किया है ।

शूद्रक राजा के शासन प्रबंध का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि-

यस्मिश्च राजनि जितजगति परिपालयति महीं, चित्रकर्मसु वर्णसंकराः, रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढबन्धाः ,शास्त्रेषु चिन्ता, स्वप्नेषु विप्रलम्भाः, छत्रेषु कनकदण्डाः, ध्वजेषु प्रकम्पाः, गीतेषु रागविलसितानि, करिषु मदविकाराः, चापेषु

गुणच्छेदाः, गवाक्षेषु जालमार्गाः, शशिकृपाणकवचेषु कलंकाः, रतिकलहेषु दूतसम्प्रेषणानि, सार्यक्षेषु शून्यगृहाः, न प्रजानामासन् ।

इस प्रकार उनकी उन्नत शासन व्यवस्था थी। सभी ओर उनकी ख्याति फैली हुई थी । वह राज्य की चिंता से मुक्त होकर धार्मिक कार्य में लगा रहता था। उनके इर्द-गिर्द मंत्री और समवयस्क साथी एवं अन्य देशों के राजा लोग बैठे रहते थे।

एक दिन प्रभात समय में सभा में प्रतिहारी ने कहा कि महाराज त्रिशंकु की राजलक्ष्मी की तरह दक्षिणापथ से आई हुई चांडाल कन्या पिंजरे में एक सुग्गा लिए हुए द्वार पर खड़ी है और प्रार्थना कर कर रही है कि पृथ्वी पर सब रत्नों को धारण कर जिस तरह आप सुशोभित हो रहे हैं ठीक उसी तरह यह चमत्कारी तोता भी सारी पृथ्वी का एक उत्कृष्ट रत्न है । अत: इसके साथ ही सेवा में उपस्थित होकर श्रीमान् के दर्शन सुख को चाहती हूँ। इस संदर्भ में आपकी क्या आज्ञा है? यह कह कर मौन हो गई।

प्रतिहारी की बात सुनकर राजा अत्यंत उत्सुक होकर अपने समीपस्थ राजाओं की ओर देखकर प्रतिहारी को आदेश दिया कि उसे ले आओ। इसके बाद वह चांडाल कन्या को भीतर लेकर आई। चांडाल कन्या ने राजा के साथ-साथ अन्य सभासदों को भी देखा। सामंतों के साथ शूद्रक भी एकटक होकर उस अनन्य सुंदरी को देखने लगे।

उसकी सुंदरता को देखकर राजा मन ही मन सोचने लगा कि कितने आश्चर्य की बात है कि ऐसे अयोग्य स्थान में विधाता ने ऐसी रूप रचना का आखिर इतना प्रयत्न ही क्यों किया? हाथ से भी स्पर्श नहीं करने योग्य यह सौंदर्य प्रतिमा मनोहर और रमणीय होने के कारण मन को आकुलता प्रदान करती है। मानो निरंतर देवताओं की निंदा करने वाली यह मनोहर रमणीय दैत्यलक्ष्मी हो।

राजा के इस प्रकार के विचारों को भंग करते हुए उसने सुग्गा को आगे बढ़ाया और कहा कि हे राजन! यह अत्यंत विलक्षण वैशम्पाण्य नाम का तोता है। यह सभी शास्त्रों का मर्मज्ञ, राजनीति कुशल, पुराणों और इतिहासों की कथाओं को सुनाने में निपुण, संगीत का ज्ञाता, अनेक नाटकों और आख्यानों की असंख्य सूक्तों को कंठस्थ और इसकी रचना में भी प्रवीण है।

इसके बाद उसको तोता ने अपने दाहिने पैर को खड़ा करके आर्या छंद में कहा । इससे राजा सहित सभी सभासद बहुत खुश हुए। इसके बाद दोपहर का समय आया। राजा सभा से उठ गए। स्नान एवं भोजन आदि के बाद राजा के सभा में बैठने के बाद पुनः वैशंपायन को वहां लाया गया। राजा के पूछने पर वैशंपायन को रनिवास में जो खाने को मिला उसका पूर्ण विवरण कर दिया।

तदन्तर राजा के पूछने पर कि अपने प्रारंभ से लेकर अब तक का पूरा जीवन चरित्र सुनाएं, वैशंपायन कुछ देर सोच कर सादर निवेदन किया और कहा यह कथा बहुत लंबी है लेकिन यदि आप उत्कंठित हैं तो सुनिए। इस प्रकार कादंबरी के पूर्व भाग की संक्षिप्त कथा का प्रारंभ होता है ।